International Day of Cooperatives
Rebuild better together
3 July 2021

कोविड -19 के मद्देनजर सहकारिता की शक्ति की पहचान

हेमा यादव, निदेशक
वैकुंठ मेहता राष्ट्रीय सहकारी प्रबंध संस्थान, पुणे

कोविड-19 महामारी ने मानवीय संवेदनाओं को झकझोर कर रख दिया । खास से लेकर आम नागरिक – बूढे से लेकर बच्चों तक को इस महामारी ने भयाकांत कर दिया । शासन से लेकर जनता तक इस महामरी से मुकाबला करने के लिए हाथ से हाथ और कंधे से कंधा मिला लिया । गॉंव, कस्बे, नगर, महानगरों के राजनीतिक, सामाजिक कार्यकर्ता एवं शासन ने कोविड-19 महामारी से बचाव के लिए स्वच्छता,जागरूकता , चिकित्सा आदि के कार्यो में एकजुटता व अपनी सहभागिता दर्शाई है ।

कोविड-19 महामारी के दौरान लॉकडाउन के कारण उत्पन्न हुई विषम परिस्थिति में खाद्य आपूर्ति, दवा आपूर्ति, स्वास्थ्य देखभाल, ऋण की उपलब्धता आदि उपलब्ध कराने से लेकर स्थिति के प्रबंधन के लिए समाजिक दृष्टिकोण को प्रदर्शित किया । उभरती सामाजिक आर्थिक स्थिति, स्वास्थ्य देखभाल और पर्यावरण प्रणाली से उत्पन्न जटिल पारिस्थिति तंत्र ने सभी समुदायों को सहयोग और सुविधा मुहैया कराने के लिए संगठित करती है । कोविड-19 की स्थिति में ये देखने में आया कि समाधान स्थानीय प्रणालियों से ही आए और शासन ने सहकारी रूप से समाधानों और योजनाओं को कार्यान्वित किया ।

3 जुलाई को मनाए जाने वाले अंतर्राष्ट्रीय सहकारिता दिवस पर, सहकारिता की भावना को नोडल एजेंसी के रूप में बनाए रखने की आवश्यकता है जो अंतर्राष्ट्रीय सहकारी गठबंधन (आईसीए) द्वारा निर्धारित सहकारिता के सिद्धांतों की रक्षा करती है, बढ़ावा देती है । सहकारिताओं को सदस्य आधारित संगठन होने के नाते स्थानीय समुदाय की जरूरतों को समझने का लाभ मिलता है।

भारतीय राष्ट्रीय सहकारी संघ (एनयूआई) के अनुसार 400 मिलियन से अधिक की प्राथमिक सदस्यता के साथ सभी प्रकार की लगभग 8 लाख सहकारी समितियां हैं जो भारत को सबसे अधिक सहकारी समितियों वाला देश होने का गौरव प्रदान करती हैं।

लॉकडाउन के दौरान स्थानीय प्रशासन, समुदायों, सहकारी समितियों और स्वयं सहायता समूह (एसएचजी) ने भोजन, दवा की आपूर्ति और क्रेडिट की उपलब्धता को बनाए रखने के लिए समाधान निकाला । स्वशासन, ग्राम स्तर पर स्वामित्व और विभिन्न जातीय समूहों के बीच सहयोग ने एक सामुदायिक दृष्टिकोण को प्रदर्शित

किया । सहकारी समितियों, स्वयं सहायता समूहों और संस्थानों ने इस क्षेत्र में शारीरिक दूरी जैसे सामाजिक नियमों को लागू करके और लोगों के बीच सहयोग सुनिश्चित करके इस क्षेत्र में कोविड-19 महामारी का मुकाबला करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई ।

कोविड-19 महामारी के दूसरे दौर में विशेष कर महाराष्ट्र राज्य में ऑक्सिजन को लेकर उत्पन्न संकट से निपटने के लिए चीनी सहकारी समितियों द्वारा लगभग 70 चीनी मिलें ऑक्सीजन निर्माण के लिए युध्द स्तर पर तैयार हो गई और अपने राज्य के अलावा देश के अन्य राज्यों को भी सहयोग करते हुए ऑक्सिजन उपलब्ध करा कर अच्छे सहकार्य का उदाहरण प्रस्तुत किया । इसी प्रकार पैक्स मूल इकाई है जो किसानों को उनकी वित्तीय आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए ग्रामीण ऋण से संबंधित है। यह किसानों को अल्पकालिक और मध्यम अवधि के ऋण प्रदान करता है जो उनकी अल्पकालिक वित्तीय आवश्यकताओं को पूरा करने में मदद करता है। यह कृषि आदानों की आपूर्ति करता है और कृषि उत्पादों के लिए विपणन सुविधा प्रदान करता है। कोविड-19 महामारी के दौरान पैक्स ने सहकारिता के धर्म का निर्वहन करते हुए किसानों को मदत पहुचाई

कोविड-19 संकट ने दुनिया भर के उपभोक्ताओं, व्यवसायों और समुदायों के लिए आर्थिक कठिनाई पैदा कर दी है।, संकट जन-केंद्रित वित्तीय प्रदाताओं के रूप में सहकारी बैंकों के लिए अपनी लचीलापन दिखाने का एक अवसर था । आईसीए के एक क्षेत्रीय संगठन, इंटरनेशनल कोऑपरेटिव बैंकिंग एसोसिएशन के अध्यक्ष सुब्रह्मण्यम भीम ने अपनी प्रतिक्रिया कुछ इस प्रकार साझा की है : *दुनिया भर के सहकारी बैंकों ने महामारी के दौरान अनुकरणीय सेवाएं प्रदान कीं, जो कोविड-19 के प्रसार से उत्पन्न चुनौतियों का बहुत अच्छा जवाब दे रही हैं। इसके* सकारात्मक परिणाम प्राप्त किए और वित्तीय सेवाएं प्रदान करना जारी रखते हुए ग्राहकों को सहज रखा।

ग्रामीण सहकारी बैंक और प्राथमिक सहकारी समितियां बत्तख और मुर्गी पालन में लगी सहकारी समितियों विशेष रूप से महिला सहकारी समितियों के लिए अल्पकालिक ऋण के लिए वित्तीय समावेशन में सक्रिय भूमिका निभा रही थीं। सहकारी संस्थाएं ऑनलाइन बैठकों और चर्चा के माध्यम से सहकारी सदस्यों तक पहुंचने में सहायता प्रदान करती रहीं।

सदस्यों के बीच मजबूत साझेदारी और लोगों की जरूरतों के लिए त्वरित संरेखण सहकारी समितियों का बेहतर गठबंधन बनाता है और सदस्यों को सेवाएं, प्रशिक्षण और वित्त प्रदान करने में सक्षम बनाता है । सहकारी समितियों, समुदायों और स्थानीय शासन निकायों को स्थायी और आर्थिक रूप से व्यवहार्य समाजों के लिए सक्षम भूमिका निभाने के लिए मिलकर काम करने की आवश्यकता है।

अन्य देशों के साक्ष्य इंगित करते हैं कि उभरती चुनौतियों से निपटने के लिए व्यावसायिकता, नवाचार, भागीदारी के लोकतांत्रिक सिद्धांत, सदस्यों के बीच जनसंपर्क, प्रौद्योगिकी के संचार और मानव शक्ति को विकसित करके सहकारिता में सफलता प्राप्त की जा सकती है । कृषि, वित्त और बैंकिंग क्षेत्र में सुधारों से यह संकेत मिलता है कि सहकारी क्षेत्र को सुधारों को अपनाने और आंतरिक प्रणाली को और आगे बढ़ाने के लिए प्रोत्साहित करने की आवश्यकता है । हमें इस अंतर्राष्ट्रीय सहकारिता दिवस पर सहकारिता की शक्ति को पचहचाने की आवश्यकता है ।

****